09 / 02 / 75 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

आध्यात्मिक शक्तियों द्वारा विश्व परिवर्तन का अनुभव

➢➢ मैं अशरीरी आत्मा हूँ...

➢➢ मैं शक्तिशाली, स्वराज्य अधिकारी आत्मा हूँ...

➢➢ मैं विश्व के मालिक की संतान आत्मा हूँ...

➳_ ➳ मैं कर्मेन्द्रियों की मालिक हूँ...

→ मैं शरीर के मालिक बन कर्मेन्द्रियों से कर्म करा रही हूँ...

■ मैं मास्टर सर्व शक्तिवान और स्वयम की मालिक आत्मा हूँ..

➢➢ मैं निश्चय बुद्धि आत्मा हूँ..

➳_ ➳ निश्चय बुद्धि विजयी आत्मा बनती जा रही हूँ...

→ मैं मास्टर सर्व शक्तिवान आत्मा हूँ...

■ और निरंतर इस निश्चय की स्मृति में स्थित हूँ..

▶ समर्थ स्मृति से मैं आत्मा पावरफुल और विजयी बनती जा रही हूँ...

▶ मैं अपने मरजीवा ब्राह्मण जीवन की स्मृति में सतही हूँ..

▶ और अपने विजयी होने के स्मृति स्वरूप बनने के आधार को मजबूत कर रही हूँ...

▶ विजय की मंजिल को प्पाने के लिए निरंतर स्मृति के मार्ग पर चल रही हूँ...

➳_ ➳ मैं आत्मा मिली हुई गॉडली लोटरी को पूरा काम में ले रही हूँ..

→ और शक्ति तथा ख़ुशी का अनुभव कर रही हूँ..

→ ईश्वरीय खजाने को यूज करने से ख़ुशी व सुख की मुझे प्राप्ति हो रही हैं...

→ मैं आत्मा सुख, आनंद और विजयी बनने की ख़ुशी का अनुभव कर रही हूँ...

➢➢ अनुभव जीवन का मुख्य खजाना

➳_ ➳ मैं ईश्वरीय मार्ग में अनुभवी आत्मा हूँ..

→ जो बोला उसे अनुभव कर रही हूँ..

■ मैं मास्टर सर्व शक्तिवान आत्मा हूँ...

■ और इसके अनुभव स्वरुप में स्थित हो रही हूँ...

▶ समय की स्मृति से मेरे अलौकिक कर्मों में बल भरता जा रहा है...

▶ अभी नहीं तो कंभी नहीं इस स्मृति में स्थित हूँ..

▶ और इससे पुरुषार्थ में तीव्रता आ रही है...

▶ करना ही है... इस दृढ संकल्प द्वारा मैं आत्मा पुरुषार्थ में आगे बढ़ रही हूँ...

▶ इससे पुरुषार्थ में फर्स्ट आ रही हूँ...

▶ और श्रेष्ठ प्रालब्ध की अधिकारी बन रही हूँ...

➳_ ➳ मंजिल की प्राप्ति ही सदा मेरी बुद्धि में रहती है...

→ मैं आत्मा बातों को रस्ते के साइड सीन समझ सहज पार कर रही हूँ...

■ मैं विश्व परिवर्तन के निमित्त आत्मा हूँ...

■ बाप की सहयोगी आत्मा हूँ...

▶ मुझ विश्व परिवर्तन की निमित्त आत्मा के लिए स्व परिवर्तन सहज होता जा रहा है...

➳_ ➳ मुझ आत्मा ने विश्व परिवर्तन का यह कार्य अनगिनत बार किया है...

➳_ ➳ बाप के साथ मैं अनेक बार निमित्त बनी हूँ...

→ अति पुरानी बात को सिर्फ निमित्त बन रिपीट कर रही हूँ...

→ अनेक बार की हुई बात की स्मृति से मुझ आत्मा में समर्थि आ रही है...

■ मैं शक्ति स्वरुप आत्मा हूँ...

▶ मैं बाप से स्नेह

▶ बाप के कार्य से स्नेह

▶ बाप के ज्ञान से स्नेह... इन तीनों का बैलेंस रख रही हूँ...

➳_ ➳ बाप के ज्ञान से मैं आत्मा शक्तिशाली बन रही हूँ...

→ एक एक ज्ञान रत्न मुझे पदम्पति बना रहा है...

→ इस महत्व को जाने से स्वत ही ज्ञान से स्नेह बढ़ता जा रहा है...

■ मैं ईश्वरीय संतान हूँ...

■ मैं विजयी आत्मा हूँ...

■ बाप का बच्चा बनते ही बाबा ने मेरे मस्तक पर विजय का तिलक लगा दिया है...

■ मैं स्नेही और सहयोगी आत्मा हूँ...

■ मैं हिम्मत से ईश्वरीय मदद प्राप्त कर रही हूँ...

■ मैं मोह जीत आत्मा बनती जा रही हूँ...